

SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)



जैविक कृषि के लिये फसल अवशेष प्रबंधन की आवश्यकता एवं महत्ता

कु. सरिता, शोधार्थी, भूगोल विभाग,
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत
कुबेर सिंह गुरुपंच, (Ph.D.) प्राचार्य,
देव संस्कृति कॉलेज ऑफ एजुकेशन एंड टेक्नोलॉजी, खपरी, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE



Corresponding Authors

कु. सरिता, शोधार्थी, भूगोल विभाग,
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी
महाविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत
कुबेर सिंह गुरुपंच, (Ph.D.) प्राचार्य,
देव संस्कृति कॉलेज ऑफ एजुकेशन एंड टेक्नोलॉजी,
खपरी, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 22/03/2022

Revised on : -----

Accepted on : 29/03/2022

Plagiarism : 01% on 22/03/2022



Plagiarism Checker X Originality Report

Similarity Found: 1%

Date: Tuesday, March 22, 2022

Statistics: 11 words Plagiarized / 1611 Total words

Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

Author's dq- ljhkrj 'kksèkkFkÉ]'kksèkdsaae & Hkwxksy foHkkoj] 'kkldh; foÜoukFk;kno
reLdj LukrdksÜkj Lo'kkldh egkfofky;] nqxZ] NÜkhlx<+>]Hkkjr M.-dqcsj flag xq# iap] çkpk;Z]
nso laL—fr d,yst v,Q .tqds'ku ,aM VsDuksy;th] [kijh] nqxZ] NÜkhlx<+>] Hkkjr Author
E&mail: missarita796@gmail-com tSfod —f'k ds fy;s Qly vo'ks" k çcaëku dh vko';drk ,oa
egRo 'kksèk lkj NÜkhlx<+> ds vkfFkZd fodkl dk vkèkkj —f'k gSA çns'k esa 80 çfr'kr ls
vfèkd tula;k —f'k vkèkkfjr dk;Z ij vkfjr gSA çLrqr 'kksèk vè;u btSfod —f'k ds fy, Qly

शोध सार

छत्तीसगढ़ के आर्थिक विकास का आधार कृषि है। प्रदेश में 80 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या कृषि आधारित कार्य पर आश्रित हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन "जैविक कृषि के लिए फसल अवशेष प्रबंधन की आवश्यकता एवं महत्ता" के अध्ययन क्षेत्र दुर्ग जिले के तीन ब्लॉक दुर्ग, धमधा एवं पाटन का चयन किया गया है, जिसके अंतर्गत कुल 51 कृषकों को चयन कर साक्षात्कार, अवलोकन विधि तथा प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है, जिसमें ज्ञात हो सके कि जिले में किस प्रकार से फसल अवशेषों का प्रबंधन कर उपयोग किया जा रहा है व जैविक कृषि, वातावरण, भूमि, जल एवं कृषकों के लिए फसल अवशेषों का प्रबंधन कितना आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द

जैविक, कृषि, अवशेष, प्रबंधन, वातावरण, संतुलन.

प्रस्तावना

धरती और किसानों का जुड़ाव कई सालों से है। कुछ साल पहले धरती फूल, हरियाली व पेड़-पौधे से ढकी थी व औसत तापमान आरामदायक था। कूलर, पंखा व एसी की जरूरत नहीं थी। ठंडा रहने के लिए सिर्फ एक पेड़ की छाया काफी थी। वर्तमान समय में पृथ्वी का वातावरण बुखार की तरह गर्म हो रहा है। जिस तरह बुखार होने पर शरीर का संतुलन बिगड़ जाता है, ठीक उसी तरह धरती का संतुलन भी धीरे-धीरे बिगड़ रही है। किसान काफी हद तक पृथ्वी के वातावरण को गर्म होने से बचा सकते हैं। धरती का तापमान लगातार बढ़ते जा रहा है। इसका कारण मानव अपनी मूलभूत सुविधा के लिए पेड़ काटना, जरूरत से ज्यादा रासायनिक

खादों का प्रयोग करना, जैविक कृषि का प्रयोग ना करना, गोबर गैस संयंत्र का प्रयोग ना करना, जानवरों को संतुलित आहार ना देना, फसल अवशेष प्रबंधन ना करना, फसल अवशेष को जला देना। वर्तमान में पृथ्वी का वातावरण, मानव स्वास्थ्य व मृदा पर भारी प्रभाव ना हो उससे पहले जैविक कृषि एवं फसल अवशेष प्रबंधन को अपनाकर पृथ्वी के वातावरण को असंतुलित होने से बचाना होगा और किसानों को इसकी आवश्यकता एवं लाभ को समझना होगा। कृषि कार्य के लिए फसल अवशेषों का प्रबंधन वर्तमान में अति आवश्यक हो गया है। कुछ वर्षों से आवश्यकता से ज्यादा रासायनिक खाद का प्रयोग, कीटनाशक दवाओं का प्रयोग, नई बीज किस्मों का प्रयोग, अगली फसल बोने के जल्दी में एवं फसल अवशेष प्रबंधन के लाभ से अपरिचित होने के कारण फसल अवशेष को जला दिया जाता है। इस अवशेष को जलाने से किसानों के कृषि लागत, मृदा का उर्वरा शक्ति ह्रास, वातावरण प्रदूषण एवं मानव स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव देखने को मिलता है। किसानों द्वारा अपने जीविकोपार्जन करने और आय प्राप्त करने के लिए खरीब, रबी और जायद तीनों प्रकार की फसलें उगाया जाता है। इन फसलों के कटाई, मिसाई, सफाई करने के बाद भूसा, पुआल, डंठल, लताएं व पतियों के शेष बचे भाग को ही फसल अवशेष कहते हैं। जैविक कृषि कार्य में फसल अवशेषों प्रबंधन का महत्वपूर्ण स्थान है। दुर्ग जिले में आय का साधन कृषि कार्य है। जिले में 1 लाख 41 हजार हेक्टेयर में कृषि योग्य भूमि है, जो कि 8000 एकड़ भूमि में 27 किसानों ने जैविक कृषि कार्य में शामिल होकर, फसल अवशेष प्रबंधन को अपनाकर कम खर्च में अधिक उत्पादन कर रहे हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. जैविक कृषि के लिए फसल अवशेष प्रबंधन की आवश्यकता एवं महत्ता का अध्ययन करना।
2. जैविक कृषि एवं फसल अवशेष प्रबंधन के प्रति किसानों को जागरूक करना।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र दुर्ग जिला है, जो भारत देश के अंतर्गत धान के कटोरा कहे जाने वाले छत्तीसगढ़ राज्य के हृदय स्थल पर शिवनाथ नदी के पूर्व में स्थित है जिसका स्थिति विस्तार 20°51' उत्तरी अक्षांश से 21°32' उत्तरी अक्षांश तक तथा 81°8' पूर्वी देशांतर से 81°37' पूर्वी देशांतर तक फैला हुआ है। दुर्ग जिला छत्तीसगढ़ राज्य के औद्योगिक विकास का अग्रदूत माना जाता है, जहां इस्पात संयंत्र की स्थापना के साथ ना सिर्फ जिले का विकास हुआ है, बल्कि संपूर्ण प्रदेश का चौतरफा औद्योगिक विकास हुआ है। दुर्ग जिला छत्तीसगढ़ राज्य का गौरव ही कहा जाता है। दुर्ग जिला का वर्तमान स्वरूप 1 जनवरी सन 2012 से है, जिसमें इसका कुल क्षेत्रफल 271862 हेक्टेयर है। 2011 के जनगणना अनुसार कुल जनसंख्या 1721948 है, जिसमें तीन ब्लॉक दुर्ग, धमधा और पाटन है। दुर्ग जिला का अधिकतम हिस्सा मैदानी क्षेत्र, ग्रामीण जनसंख्या एवं संसाधन से परिपूर्ण होने के कारण कृषि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

शोध की प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र के सूक्ष्म स्तरीय अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। जैविक कृषि के लिए फसल अवशेष प्रबंधन को ज्ञात करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों के छोटे- बड़े 51 किसानों से साक्षात्कार, अवलोकन के मध्यम से प्राथमिक आँकड़े को एकत्र किया गया है। द्वितीयक आँकड़े सरकारी कार्यालय, गैर सरकारी कार्यालय, पत्र-पत्रिकाओं एवं इंटरनेट से प्राप्त जानकारी पर आधारित है।

जैविक कृषि के लिये फसल अवशेष प्रबंधन की आवश्यकता एवं महत्व

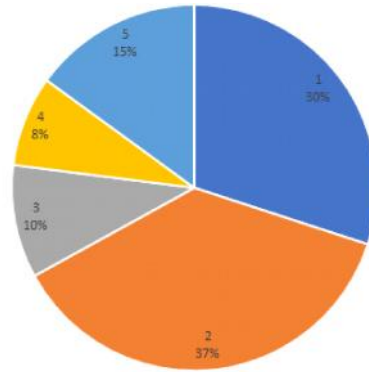
जैविक कृषि कार्य के क्षेत्र में फसल अवशेष प्रबंधन का महत्वपूर्ण स्थान है। फसल अवशेष को सही तरीके से प्रबंधन किया जाए तो कृषि कार्य के क्षेत्र में कृषि लागत को काफी हद तक कम किया जा सकता है और उत्पादन की क्षमता में भी वृद्धि की जा सकती है। किसान फसल अवशेष प्रबंधन सर्वे 2019, 2020, 2021 के अनुसार जिले में खरीब, रबी और जायद फसलों के अवशेषों को इस प्रकार प्रबंधन कर उपयोग किया जा रहा है।

फसल अवशेष प्रबंधन उपयोग 2019

क्रमांक	विभिन्न फसल अवशेष प्रबंधन	प्रतिशत
1	पशुओं के चारे के लिए एकत्र	30
2	खेतों में ही जलाना	37
3	खेतों में जुताई कर मिश्रण	10
4	जैविक खाद	8
5	घरेलू उपयोग	15
	कुल योग	100

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

चित्र 1

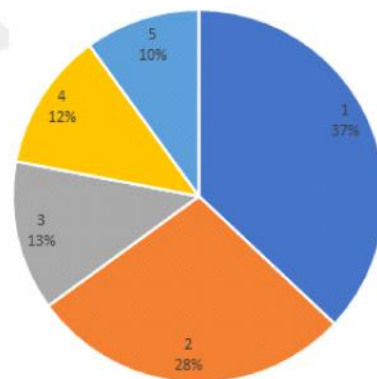


फसल अवशेष प्रबंधन उपयोग 2020

क्रमांक	विभिन्न फसल अवशेष प्रबंधन	प्रतिशत
1	पशुओं के चारे के लिए एकत्र	37
2	खेतों में ही जलाना	28
3	खेतों में जुताई कर मिश्रण	13
4	जैविक खाद	12
5	घरेलू उपयोग	10
	कुल योग	100

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

चित्र 2

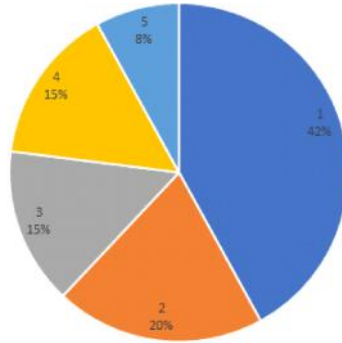


फसल अवशेष प्रबंधन उपयोग 2021

क्रमांक	विभिन्न फसल अवशेष प्रबंधन	प्रतिशत
1	पशुओं के चारे के लिए एकत्र	42
2	खेतों में ही जलाना	20
3	खेतों में जुताई कर मिश्रण	15
4	जैविक खाद	15
5	घरेलू उपयोग	8
	कुल योग	100

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

चित्र 3



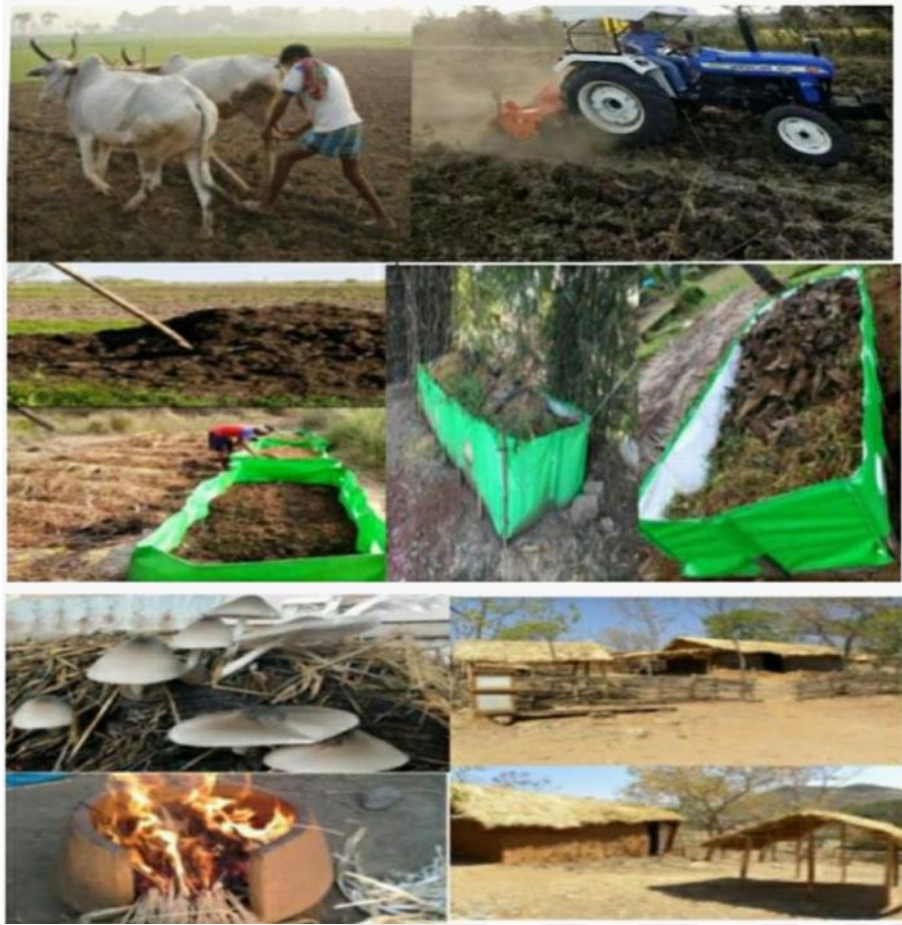
फसल अवशेषों के लिए प्रबंधन विकल्प

1. फसल अवशेष को पशुओं के लिए चारे के रूप में प्रयोग करना।
2. फसल अवशेष को खेतों में ही जुताई करके मिश्रण करना।
3. फसल अवशेष को जैविक खाद बनाकर जैविक कृषि कार्य में प्रयोग करना।
4. घरों के छप्पर छाने में फसल अवशेष का प्रयोग करना।
5. मशरूम उत्पादन में फसल अवशेष का उपयोग करना।
6. फसल अवशेष को बीज बोने के बाद ढकने में प्रयोग करना।
7. फसल अवशेष को पशुओं के बिछावना के रूप में प्रयोग करना।
8. फसल अवशेष को ईंधन के रूप में प्रयोग करना।

चित्र 4



चित्र 5



जैविक कृषि के लिए फसल अवशेष प्रबंधन की आवश्यकता

1. जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिए।
2. कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए।
3. किसान मित्र जीव को बचाने के लिए।
4. पर्यावरण प्रदूषण होने से बचाने के लिए।
5. मृदा उर्वरा शक्ति को लम्बे समय तक बनाए रखने के लिए।
6. कम लागत में उच्च गुणवत्ता वाली जैविक खाद प्राप्त करने के लिए।
7. स्वास्थ्य अनाज, फल, सब्जी के लिए।
8. किसानों के आमदनी बढ़ाने के लिए।

जैविक कृषि के लिए फसल अवशेष प्रबंधन का महत्व

1. जैविक कृषि विकास के लिए फसल अवशेष प्रबंधन का उपयोग अति आवश्यक है, जिसमें किसानों को कम लागत में अधिक लाभ मिल सकती हैं।
2. फसल अवशेषों का प्रबंधन कर जैविक फसलों को समय में बुवाई कर अधिकतम उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।
3. फसल अवशेष का प्रबंधन करने से मृदा के भौतिक रासायनिक एवं जैविक गुणवत्ता में वृद्धि की जा सकती है।

4. फसल अवशेष को मृदा में मिश्रण करने से मृदा की जल धारण शक्ति बढ़ जाती है, पौधों में लंबे समय तक सिंचाई करना नहीं पड़ती है ।
5. फसल अवशेष मृदा में उपलब्ध छोटे सूक्ष्मजीव की संख्या को वृद्धि करता है और कार्बनिक पदार्थों का विघटन कर पौधों के लिए पोषक तत्वों को उपलब्ध कराती है ।
6. फसल अवशेष के उचित प्रबंधन से वातावरण को प्रदूषण होने से भी बचाव बचाया जा सकता है ।
7. फसल अवशेषों को खेतों में प्रबंधन कर कृषि लागत को कम किया जा सकता है, साथ में मृदा क्षरण को भी रोका जा सकता है ।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन कार्य से यह स्पष्ट होता है, कि छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के लिए फसल अवशेष प्रबंधन अत्यंत ही महत्वपूर्ण है । जिस प्रकार हमें एक शुद्ध वातावरण चाहिए तो हमारी जिम्मेदारी बनती है, कि आने वाली पीढ़ियों का जीवन भी स्वस्थ हो इसके लिए हमें कुछ जरूरी कदम उठाने की आवश्यकता है । जिले के किसानों को फसल अवशेषों के लाभ के बारे में परिचित कराना, फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन से किसानों के आय को बढ़ाना, कृषि लागत कम कर अधिक उत्पादन प्राप्त करना, फसल अवशेष से जैविक खाद निर्माण करना, फसल अवशेषों को ना जलाना, पर्यावरण प्रदूषण होने से, मृदा क्षरण व मृदा उर्वरा शक्ति को बनाए रखना एवं फसल अवशेषों को सही समय पर प्रबंधन कर हम पृथ्वी के समस्त जीव-जंतु व पेड़-पौधे को प्रभावित होने से बचा सकेंगे ।

संदर्भ सूची

1. गुप्ता, अरुणेश (2021), *शोध समागम*, आदिति पब्लिकेशन, रायपुर (छत्तीसगढ़), वर्ष 2, अंक 2, पृ.1604-1605 ।
2. कुमार, योगेश, सुरेंद्र, मोहन, ममता एवं अरुण (2020), *"अवशेष प्रबंधन लेख"*, कृषि विज्ञान केंद्र भा.कृ.अ.नू. प.- राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल (हरियाणा), पृ.8-10 ।
3. पटेल, अनुराग, दुष्यंत एवं रमेश (2019), *"फसल अवशेष प्रबंधन तकनीकी एवं उपयोगी यंत्र"*, भा.कृ.अ. नू. प.- कृषि अभियांत्रिकी संस्थान- भोपाल (मध्य प्रदेश), पृ.30-34 ।
4. सुनीता, संदीप, निवेता, रमेश एवं शिवधार (2019), *"फसल अवशेष जलाने का वातावरण पर प्रभाव तथा उसका प्रबंधन"*, भा.कृ.अ.नू.प.- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान- नई दिल्ली (भारत), पृ. 1-3 ।
5. वी.के.चौधरी, पी.के. सिंह, चेतनसियार, सुभाष चंद्र एवं संतोष (2018), *"फसल अवशेषों का समुचित प्रबंधन"*, भा.कृ. अ.नू.प. खरपतवार अनुसंधान निदेशालय -जबलपुर (मध्य प्रदेश), पृ. 1-2 ।
6. वर्मा, हिमांशु (2021), *"फसल अवशेष प्रबंधन लेख"*, प्रेरणा नेगी शस्य विज्ञान विभाग, स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंसेज, श्री गुरु राम राय विश्वविद्यालय, देहरादून (उत्तराखंड), पृ.5 ।
7. <https://durg.gov.in>
